पाठ्यक्रम का क्षेत्र
(Scope of Curriculum)

सामान्य बोलचाल की भाषा में विद्यालयों में विद्यार्थियों को शिक्षित करने हेतु जो कुछ किया जाता है उसे पाठ्यक्रम के नाम से जानते है।

यदि हम पाठ्यक्रम के क्षेत्र के बारे में बात करें तो यह देश और काल की भिन्नता के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। पाठ्यक्रम का सम्बन्ध समाज से होता है जिससे उनमें परिवर्तन करते है, संवर्धन करते हुए उद्देश्यों की प्राप्ति अनिवार्य है।

प्रारम्भ में खेलकूद को को पाठ्यक्रम से बाहर रखकर, विषयों को महत्व दिया परन्तु आधुनिक जन्दर्भ में खेलकूद (शारीरिक शिक्षा) के साथ पर्यावरण, यौन शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, कम्प्यूटर जैसे विषयों को पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिया गया जिससे स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम का क्षेत्र व्यापक ही नहीं बल्कि संकल्प के साथ समायोजन भी है।

प्रारम्भ में पाठ्यक्रम का क्षेत्र विषयों की निश्चित पाठ्यवस्तु तक ही सीमित था। किन्तु आधुनिक या प्रगतिवादी धारणा के प्रचलित होने से ही इसका तीव्र विकास हुआ।

व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर विद्यालय क्रियाओं, प्रवृत्तियों को तीन प्रमुख वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

(i) शैक्षिक क्रियाएं — (Education Activities)
(ii) पाठ्य – सहगामी क्रियाएं, (Co-curricular Activities)
(iii) रूचि कार्य (Hobbies)

(i) शैक्षिक प्रवृत्तियाँ अथवा क्रियाएं —

यद्यपि विद्यालय में आयोजित सभी क्रियाएं शैक्षिक ही होती हैं, किन्तु सामान्य रूप से उन्ही प्रवृत्तियों को शैक्षिक कहा जाता है जिनका नियोजन कुछ निश्चित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु निर्धारित पाठ्य-विषयों के पठन - पाठन की दृष्टि से किया जाता है।

किन्तु वर्तमान में प्रायोगिक कार्यों का पाठ्यक्रम में समावेश होने से, बालकों की सक्रियता को बल देने के फलस्वरूप प्रयोगशालाएं, कार्यशालाएं, पुस्तकालय आदि शैक्षिक उपकरण बन गये हैं।

(ii) पाठ्य-सहगामी क्रियाएं :-

प्रारम्भ में विद्यालयों में केवल अध्ययन-अध्यापन को ही महत्व दिया जाता था, लेकिन व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर आधुनिक पाठ्यक्रम में, खेलकूद, व्यायाम, सांस्कृतिक क्रिया-कलाप आदि पाठ्येत्तर क्रियाओं को सम्मिलित किया गया। इन क्रियाओं/प्रवृत्तियों को पाठ्य-सहगामी क्रियाएं कहा जाता है जो इस प्रकार हैं।

(A) शारीरिक विकास सम्बन्धी क्रियाएं,
(B) साहित्यिक क्रियाएं,
(C) सांस्कृतिक क्रियाएं,
(D) सृजनात्मक क्रियाएं,
(E) सामाजिक क्रियाएं,
(F) राष्ट्रीय क्रिया-कलाप,

Scanned with CamScanner

गा। रुचि कार्य (Hobbies) —

इसके अन्तर्गत वे प्रवृत्तियाँ आती हैं जिनका आयोजन विद्यालयों द्वारा बालकों की रुचियों का समुचित विकास करने के लिए किया जाता है। जैसे—: टिकट, सिक्के, पत्थर आदि का संग्रह करना, चित्र एवं कार्टून बनाना इत्यादि।

वास्तव में पाठ्यक्रम का विकास मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया का ही परिणाम है। मानव जीवन से सम्बन्धित हर पक्ष का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पाठ्यक्रम पर पड़ता है।

Scanned with CamScanner